459 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | चतुर्थ अंक | नवम्बर 2016

इस अंक में...

9 प्रभावित होना या नहीं ?
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
22 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
33 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
40 नवीनतम सामान्य ज्ञान
45 खेलकूद
51 रियो पैरालम्पिक्स में भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन
52 रोजगार समाचार
54 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
57 युवा प्रतिभाएं
68 स्मरणीय तथ्य
71 विश्व परिदृश्य
76 फोकस—डिजिटल लाभांश : समावेशन, दक्षता एवं नवप्रवर्तन
79 भौगोलिक-आर्थिक लेख-राष्ट्रीय आपदा प्रबन्धन योजना
83 भौगोलिक लेख—मैंग्रोव वन एवं इसकी उपयोगिता
85 ऐतिहासिक लेख—1857 की क्रान्ति के बाद भारत में राष्ट्रीय चेतना का उदय
88 पारिस्थितिकी लेख—जैव विविधता एवं उसकी उपयोगिता
90 तकनीकी लेख—जन-सहभागिता की नई उड़ान : क्राउड-सोर्सिंग
91 ग्राम-विकास लेख—ग्रामोदय से भारत उदय अभियान की प्रासंगिकता
93 सांस्कृतिक लेख—भारत की प्रमुख सांस्कृतिक संस्थाएं एवं संगठन
96 कृषि लेख—कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्र : प्रगति और प्रबन्धन की आवश्यकता
100 सार संग्रह
104 सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2016 : विषयवार विश्लेषण प्रथम प्रश्न-पत्र
105 वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान–(i) सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
116 (ii) मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
124 (iii) यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड (ए.ओ.) परीक्षा, 2016
127 (iv) क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक ऑफीसर परीक्षा, 2015
129 अंतरवैयक्तिक संचार-आगामी संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
131 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
133 ऐच्छिक विषय—(i) राजनीति विज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
138 (ii) वाणिज्य—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
146 बौद्धिक और तर्कशक्ति-मैनेजमेण्ट एप्टीट्यूड टेस्ट, 2015
149 तर्कशक्ति-आन्ध्रा बैंक प्रोबेशनरी ऑफीसर परीक्षा, 2015
155 संख्यात्मक अभियोग्यता—एस.बी.आई.प्रोबेशनरी ऑफीसर प्रारम्भिक परीक्षा, 2016
160 क्या आप जानते हैं ?
161 अपना ज्ञान बढ़ाइए
162 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—न्यायिक सक्रियता से कार्यपालिका की शक्तियों का ह्रास हुआ है
164 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—समावेशी विकास हेतु वित्तीय समावेशन आवश्यक है
166 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-448 का परिणाम
167 English Language– SIDBI Assistant Manager Exam., 2016
171 हिन्दी—उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित राजकीय डिग्री कॉलेज, असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा, 2013

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

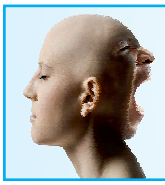

प्रभावित होना या नहीं ?

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

इस जिन्दगी में अन्यों से प्रभावित नहीं होना, तो अशक्य-सा ही है. हर आयु (Age) में हम सभी सदा ही किसी-न-किसी से प्रभावित होते रहते ही हैं. बालक तो नकलची होते ही हैं, युवा व वृद्ध भी कुछ कम नहीं. नकल में अकल लगाने वाले डेढ़ होशियार लोगों की भी यहाँ कमी नहीं, किन्तु आज हम यहाँ बात कर रहे हैं इस विषय पर कि हमें किससे प्रभावित होना है ? कितना प्रभावित होना है ? एवं कैसे प्रभावित होना है, तो आइए जानें कि हमें किससे प्रभावित होना चाहिए और किससे नहीं·····

1. **नकारात्मक चिन्तन**—नकारात्मक चिन्तन और सोच रखने वालों में से प्रभाव नहीं लेना—अन्यथा ऐसे लोग हमारे चित्त को भी विकृत कर डालेंगे. ये वे लोग होते हैं जो स्वयं कुछ नहीं कर पाते और जब अन्य किसी को कुछ अच्छा करते हुए या आगे बढ़ते हुए देखते हैं, तो प्रायः कहा करते हैं कि यह करने से क्या हो जाएगा ? यह सब फालतू है ? हमने तो ऐसा कार्य कर-करके छोड़ दिया है. आज के युग में इन कामों की कद्र ही क्या है ? इस प्रकार वे हर विषय-वस्तु को कम महत्वपूर्ण आँकने में मशगूल रहते हैं एवं किसी भी व्यक्ति के प्रेरणा स्तर को घटाने में तत्पर रहते हैं, तब सम्भव है, वे आपके करीबी मित्र या रिश्तेदार ही हों, घर में मौजूद बुर्जुग लोग ही क्यों न हों, ऐसे नकारात्मक कथा-कथन करने वालों से हमें प्रभावित होने की कतई आवश्यकता नहीं है, बल्कि हो सके, तो इनसे दूरी ही बनाकर रखना बेहतर होगा.

कई किशोर बालक-बालिकाओं को उनकी दादी-नानी की आदतें अच्छी नहीं लगती, पर ऐसे में यदि वे उनकी बुरी लगने वाली बातों व आदतों पर अपना ध्यान ले जाएंगे, तो एक दिन उन्हें भी उन्हीं आदतों का शिकार होना पड़ जाएगा, इसीलिए किसी की भी अच्छी न लगने वाली बातों को अपनी बातों का हिस्सा न बनने दो, अन्यथा उनके शिकार खुद-ब-खुद बन जाओगे.

कुछ लोग निराशावादी होते हैं. वे हर घटना को अपने दुःखों का सबब मानते रहते हैं, हर बात के अंधियारे पक्ष को उजागर करने में मशगूल रहते हैं जैसे कि किसी पिता को अपनी बेटी से प्यार करते हुए देखकर कह उठते हैं कि 'इसे इतना प्यार क्यों करते हैं. कल तो ये तुम्हें छोड़कर चली जाएगी बेटियाँ तो पराई होती हैं, इन पर इतना मन लगाना उचित नहीं ····· ऐसे अनेक उदाहरण आए दिन देखने को मिलते हैं जहाँ लोग वियोग, मौत व शोक को ही अपनी नजरों में बसाए जीते हैं, वे गीत भी गाते हैं, तो ऐसा ही गाते हैं कि—